उ.प्र. हिन्दी संस्थान द्वारा 'धर्मयुग सर्जना पुरस्कार' से सम्मानित
कथा प्रधान त्रैमासिकी

निकट - 35

मूल्य : ₹ 40/-
मई-अगस्त 2023
संपादक : कृष्ण बिहारी

निकट

कथा-प्रधान त्रैमासिकी

उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा 'धर्मयुग सर्जना पुरस्कार' से सम्मानित

संयुक्त अरब इमारात से शुरू अब भारत से प्रकाशित

वर्ष-16, अंक - 35, **मई-अगस्त 2023**, मूल्य-₹40

व्यवस्थापक
अशोक कुमार
सलाहकार
राजेन्द्र राव
संपादक
कृष्ण बिहारी
उप-संपादक
रामनारायण त्रिपाठी,
लखनऊ
धनंजय सिंह
राधेश्याम यादव,
अबू धाबी
भूपेंद्र कुमार
सहयोगी-राजवंत राज,
रियाज़ अहमद
पारुल तोमर
व्यवस्थापक
अभिनव त्रिपाठी
कानूनी सलाहकार
राजेश तिवारी एडवोकेट
2/241, विजय खण्ड,
गोमती नगर, लखनऊ

आवरण - अन्तरिक्ष

रेखांकन – परमजीत कौर

मूल्य :
भारत में 40/- रुपये
खाड़ी में 20 दिरहम
यू.के. और अमेरिका में 5 डॉलर

सदस्यता शुल्क
1 वर्ष के लिए = रु 500/-
3 वर्ष के लिए = रु 1500/-
निम्न खाता सं. में
नगर / चेक / डी.डी. जमा करें
बैंक का नाम : बैंक ऑफ बड़ौदा
शाखा : सराय मसवानपुर ब्रांच, कानपुर
खाता सं. Krishna Behari Tripathi
28050100010192
IFSC : BARB0SAPRBS

रचनाएं भेजने का पता
निकट कार्यालय-
HIG-46, B BLOCK, PANKI
KANPUR-208020
Mo. 6307435896
ईमेल:
krishnatbihari@yahoo.com

भारतीय भाषा संवर्धन संस्थान द्वारा सहयोग प्राप्त

इस अंक में...

संपादकीय – ***समय से बात*** 02
पिछले अंक पर प्रतिक्रिया 05
कहानियाँ
सुधा ओम ढींगरा - **चलो फिर से शुरू करें...** 07
हरभजन सिंह मेहरोत्रा – **निरुत्तर** 11
विनीता शुक्ला – **बच्चे** 14
मार्टिन जॉन - **मेरा सुप्रीम पॉवर** 19
रंजना जायसवाल – **स्टेच्यू** 22
रेखा श्रीवास्तव - **एक घर की तलाश** 26
शेषनारायण पांडे – **लबड़थी** 30
राजेश कदम - **सुरेश जी, आप....!** 33
जयराम सिंह गौर – **टीस** 37
बरेन सरकार – **स्वगत** 40
राकेश राय – **जूता** 43
बी एन झा – **वारिस** 46
अनूदित रचनाएँ
पंजाबी से अमरीक सिंह दीप – **लहू का रंग कौन सा है** 51
उपन्यास अंश - बांग्ला से श्याम सुंदर चौधरी – **तृष्णा की शांति** 55
लघुकथाएं
मधु प्रधान, कौशल पाण्डेय, विनय मोघे, आरती रॉय,
डॉ. आशा सिंह, प्रेरणा गुप्ता, बलराम अग्रवाल
कवितायें 59
सुभाष राय, पारुल तोमर, नीलोत्पल रमेश
ललन चतुर्वेदी, भरत प्रसाद, मनोज राव, कुश कुमार कामरा
यात्रा-वृतांत - नीरज नीर - **अंडमान- स्वर्ग ऐसा...** 65
संस्मरण - धनंजय कुमार सिंह - **मैंने इन्हें करीब से देखा** 70
रिपोतार्ज - कोलकाता अन्त. पुस्तक मेला – **श्याम सुंदर चौधरी** 73
व्यंग्य
समीक्षा तैलंग - **मौके से हताहत मौकाटेरियन** 75
निकट 34 का लोकार्पण – मीनाधर पाठक - **आख़िर कब तक...**78
पुस्तक समीक्षा
अपूर्व जोशी पर अरुणेन्द्र नाथ वर्मा 80
राजेंद्र राव पर राकेश शुक्ला 82
रूदादे सफ़र (पंकज सुबीर) पर धनंजय कुमार सिंह, 85
पंकज चतुर्वेदी के कविता संग्रह पर अनीता मिश्रा 87
महेंद्र भीष्म पर डॉ. विवेक कुमार मिश्रा 89
राम नगीना मौर्य पर विजय कुमार तिवारी 91
साक्षात्कार-विज्ञान कथाकार डॉ. अरविंद मिश्र से 93
अमित कुमार की बातचीत

अगला अंक – निकट 36 / 2023

स्वामी, सम्पादक कृष्ण बिहारी एच.आई.जी. - 46, पनकी, बी ब्लाक, कानपुर - 208020 से प्रकाशित
मुद्रक अमन प्रकाशन कानपुर- 9415475817, 8419891954

संपादकीय

समय से बात

तेजाब और हत्या की सभ्यता में प्रेम की संस्कृति गुम हो रही है

इन दिनों शायद ही कोई दिन ऐसा जाता हो जब प्रेमी-प्रेमिका पर तेजाब फेंकने या उनकी नृशंस हत्या की ख़बर न मिलती हो । अख़बार हों या टी वी चैनेल्स, इस तरह की ख़बरें प्रमुखता से परोस रहे हैं। ऐसी ख़बरें न हों तो लगता है कि कहीं कुछ हुआ ही नहीं । पाठक इन खबरों का आदी हो गया है । सुबह की चाय की तरह। असल में ख़बरें परोसना तो समाचार माध्यमों का काम है । मगर मैं यह सोचने पर विवश हूँ कि आख़िर ऐसा क्या है कि मनुष्य को इन ख़बरों के एडिक्शन से मुक्त होना मुश्किल लगने लगा है । क्या सकारात्मक और रचनात्मक ख़बरों का टोटा पड़ गया है ! क्या समाज में कुछ भी अच्छा नहीं हो रहा ? और क्या मनुष्य हिंसा, कुरुपता और हॉरर के प्रति ही उत्सुकता से भरा हुआ जिज्ञासु जीवन की प्यास बुझाने में लगा है ? अनेक प्रश्न हैं जो बेचैन करने वाले हैं । ये ख़बरें कम से कम मुझे तो अवसाद से भर देती हैं । मन में जुगुप्सा उत्पन्न होती है । घूम-फिरकर एक ही सवाल कि प्रेम क्या इतना विध्वंसक हो गया है जो सुंदरता को कुरुप और जीवन को मृत्यु में बदल देने के लिए किसी भी सीमा तक क्रूर हो सकता है ? क्या यह प्रेम है ? बीसवीं सदी और इक्कीसवीं सदी के बीच ऐसा क्या हो गया कि अनादि काल से मनुष्य में बसने वाली यह कोमल अनुभूति संक्रमण का शिकार होकर निर्दय होती गई । निष्ठुर या पत्थर दिल इनसान में भी जब प्रेम का अंकुर जन्म लेता है तो वह करुणा और उदारता के साथ ही त्याग की भावना से ओतप्रोत हो जाता है । उसे अपनी सुध नहीं रहती । वह दीवाना हो जाता है । मजनू हो जाता है । उसके दीवानगी में मासूम मोहब्बत जीती है । पत्थर मारने वालों को वह पत्थर नहीं मारता । हाथ में खंजर नहीं उठाता। फिर करुणा की कोख से ये हिंसक दीवाने कहाँ से पैदा हो गए जो आए दिन अपनी बर्बरता से समाज को इस तरह इम्यून बना रहे हैं कि समाज दुष्यंत कुमार की ग़ज़ल का एक शेर हो गया है –

इस शहर में वो कोई बारात हो या वारदात
अब किसी भी बात पर खुलती नहीं हैं खिड़कियाँ ।

प्रेम का वह तत्व कहाँ गया जिसमें प्रेमी-प्रेमिका एक-दूसरे की शक्ल देख पाने को तरस जाते थे । बात करने को तरस जाते थे । हम एक-दूसरे से प्रेम करते हैं , यह कह पाने का मौका उनको आजीवन नहीं मिल पाता था मगर उनमें जीवन की आख़िरी सांस तक जीता था । वे न तो आत्महत्या करते थे और न एक-दूसरे की हत्या की बात कभी सोचते थे । देवदास बनकर जीना मंजूर था मगर हत्यारे का विशेषण ढोना उनके ख़यालों में दूर-दूर तक नहीं था । ज़िंदगी भर एक-दूसरे के लिए शुभकामनाएं लिए जीने वाले और प्रेम की रक्षा में उसकी पुकार पर प्राण न्योछावर करने वाले वे लहना सिंह और वे मधूलिकाएं कहाँ गईं ? मन लेहु पे देहु छटांक नहीं , वाले घनानन्द कहाँ गए ? वे प्रेम-पत्र कहाँ गए जिन्हें प्रेमी-प्रेमिका लिखते तो थे पर एक-दूसरे तक पहुंचा पाने के लिए उन्हें कबूतर भी नहीं मिलते थे । और , अगर कहीं प्रेम-पत्र पा जाते तो उन पत्रों को बार-बार न जाने कितनी बार इस उम्मीद में पढ़ते थे कि कहीं कुछ पढ़ने से बचा तो नहीं रह गया , कहीं कुछ और तो नहीं लिखा है । प्रेमिका पर अगर खलनायक संकट बनता तो प्रेमी खलनायक को कुत्ता , कमीना कहते हुए उसका खून पी जाने की चेतावनी देता । उलझ जाता और कभी-कभी अपने प्राण भी दे देता । प्रेमिका के कठोर व्यवहार पर उसे बेवफा तो क़हता मगर साथ में यह भी कि कुछ मजबूरियाँ रही होंगी वरना कोई यूं ही बेवफा नहीं होता। उस बेवफा के लिए भी दिल में मोहब्बत ही होती , इंतकाम नहीं होता था ।

उखड़ती साँसों में डोली विदा हो जाती थी । आँसू होते थे । जलधार बहती थी । मगर छिपकर । आँसू सूखकर हृदय में बर्फ हो जाते थे और जब कभी ज़िंदगी में वह उष्णता याद आती थी तो पिघलकर बहने लगते थे । हाँ , तब प्रेम के बीच मोबाइल नहीं था ... घृणित सेल्फ़ियाँ नहीं थीं ... न्यूड वीडियो नहीं बनाए जाते थे ...उद्दाम संभोग नहीं था ... और ब्लैकमेलिंग नहीं थी ...